कविताएं

– सुरेन्द्र चतुवेर्दी

तलवार

जब कहीं कोई नई तलवार बनती है
मेरा दिल कांप–कांप जाता है
तलवार, चाहे लोहे की हो
चांदी की या कागज की
कभी न कभी किसी न किसी तरह
कातिल के हाथ
पहुंच जाती है।
तलवार किसी बदनीयत ने नहीं बनायी।
और किसी नेकनीयत ने नहीं चलायी।
इतिहास गवाह है
हमेशा बेगुनाह की छाती में
घोंप दी जाती है।
जब कहीं कोई नई तलवार बनती है
मेरा दिल कांप–कांप जाता है।

राजनीति

जल नल में है
पान दुकान में
जलपान कहीं नहीं।
राज लखनऊ में है
नीति दिल्ली में
राजनीति कहीं नहीं।

प्रगति

हम किसी की लड़ाई नहीं लड़ रहे हैं
हम तो खुद आगे बढ़ रहे हैं
हम किसी की नून तेल हल्दी में नहीं हैं।
माफ़ कीजिए हम कतई जल्दी में नहीं हैं।

रहनुमा

तीस वर्ष चलते–चलते
चौराहों पर चौराहे पार करते
हमारा काफ़िला
एक शहरी चौराहे पर रुक गया है
जहां आगे बढ़ने का संकेत
देने वाली हरी बत्ती बुझ गयी है
और रुक जाओ कहने वाली
लाल बत्ती लपझप लपझप
जल रही है।
इन्हें दायें जाना है

उन्हें बायें जाना है
तुम्हें सीधे जाना है
अब लगता है थोड़ी देर में
एक सिपाही आयेगा
जो हम सबको
आगे जाने का
एक ही रास्ता बतायेगा।

अफ़सर

पढ़ने भर को
हैं फाइलें
लिखने भर को
हस्ताक्षर
सुनने को
कान भर गालियां
कहने को
जीवन भर 'सर'।

गीत–संगीत

किसी घटिया फिल्म से
उठायी हुई
बढ़िया लिपिस्टिकी मुसकान
कल जो तुमने ऊपर फेंक दी थी
मुझे धराशायी कर गयी है
तभी से मुझे
गीतों की बदहजमी है
तर्जों के दौरे आते हैं।

नुस्खा

बड़े बनना है
तो तुम्हीं बन जाओ
जाओ,
फूट चुकी जहां फरिश्तों की
तुम भी अपनी वहीं
किस्मत आजमाओ।
जाओ
क्यों उचकते हो यार लखनऊ में
मौका है
दो दिन को दिल्ली हो आओ।

रक्षा

मैं तो बहुत
कच्चा था

दोस्तों न मुझे पकाया
दुश्मनों के हर ख़तरे से बचाया
और फिर
बड़े चाव से खाया।

मैं

हर रोज़ दोपहर की दोस्ती को
हर शाम को भुला कर
रात को अकेला सो जाता हूं
हाय रोज़ मैं क्या हो जाता हूं।

सहयोग

दुख (शरारती)
तुमको भी दुख है
मुझको भी दुख है
आओ हम एक दूसरे का दुख बांटे
इसी कोशिश में
एक रात और आराम से काटें।

आधुनिक बोवी

आधुनिक बीवी
बिल्कुल
गाय होती है
आगे चलते हुए पति के
सींग मारती है
और पीछे चलते हुए
प्रियतम के लात
बगल पे चलने नहीं देती
और दूध
महज़ बच्चों को नहीं देती।

यू0पो0 के दो शेर

शास्त्री जी ने
उठाया झण्डा
गुप्ता जी ने झण्डी
शास्त्री जी ने मारा डण्डा
गुप्ता जी ने डण्डी

नासमझी

मियां भुट्टो
तुम करते हा

हिन्दुस्तान से
हज़ारों बरस लड़ाई के वादे
अरे मियां
जरा आंखे खोलो
देखो भालो
सोचो और समझो
चुप रह गए हो
कमलापति त्रिापाठी के आधे

नोट – यह कविता बंगलादेश की विजय के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्राी श्री कमलापति त्रिापाठी की अध्यक्षता में हुए एक कवि सम्मेलन में सुनाई थी।

मुसीबत

अजीब
झंझट में
फंस गया है
खुदाई बन्दा
इस देश में
नेता बातूनी हैं
अफसर बहरे
और कानून अंधा

गायक

बैजू
बावरे की तरह
मैंने भी सारंग
वर्षों गाया
गाते गाते मिरगी
कई बार आयी
मृिग नहीं आया

संकलनकर्ता .मेजर जनरल नीलेनद्र कुमार